हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL3**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): अनुपम जाखड़.

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 3 / 13/08/2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	0	9	5	5	3	7

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Anupam

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं।

परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

उत्तर हिन्दी (देवनागरी लिपि) में ही लिखे जाएंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशत: दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

कुछ उत्तर अच्छे हैं। शेष को और बेहतर बनाने का प्रयत्न करें

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 122½ टिप्पणी (Remarks):

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: $10 \times 5 = 50$

(क) खड़ी बोली के विकास में ईसाई मिशनरियों की भूमिका

खड़ी बोली 19वीं सदी में ब्रजभाषा को पछाड़कर नवीन जरूरतों को पूरा करती है तथा गद्य का विकास इसमें प्रारंभ होता है। 19वीं सदी में ईसाई मिशनरियों व फोर्ट विलियम कॉलेज ने हिन्दी के प्रचार प्रसार में योगदान दिया।

ईसाई ~~मिशन~~ मिशनरियों का प्रमुख कार्य ईसाई धर्म का प्रचार प्रसार था। इसके लिए हिन्दी या लोकभाषा का ज्ञान आवश्यक था। ईसाई मिशनरियों ने 'बाईबिल' का अनुवाद हिन्दी में किया। इसके लिए प्रेस की स्थापना भारत में हुई।

ईसाई मिशनरियों ने अन्य भारतीय ग्रंथों को भी हिन्दी में अनुदित किया। भारतीय रीति-रिवाज व परंपरा को समझने के लिए यह आवश्यक था।

इस प्रकार खड़ी बोली को महत्व मिला। इसे फोर्ट ~~विलियम~~ विलियम कॉलेज में हिन्दुस्तानी विभाग के अन्तर्गत पढ़ाया जाने लगा। खड़ी बोली संपर्क भाषा के रूप में अन्तर भारत में थी। इसका ज्ञान ईसाई मिशनरियों की आवश्यकता थी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के सुझाव

महात्मा गाँधी के प्रयासों से हिन्दी साहित्य सम्मेलन व ~~का~~ कांग्रेस का अधिवेशन एक साथ होते थे। गाँधीजी ने हिन्दुस्तानी भाषा को राष्ट्रभाषा का दर्जा देने की माँग की। इसके लिए मानकीकृत लिपि देवनागरी होनी चाहिए।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन में नागरी प्रचारिणी समिति बनाई गई जिसके अध्यक्ष काका ~~कालेलकार~~ कलेलकर थे। इसने शिरोरेखा का प्रयोग करने, 'घ' व 'ध' में विभेद के लिए घुण्डी का प्रयोग करने तथा विसर्ग को हटाने (दुःख → दुख) का सुझाव दिया गया।

नरेन्द्र देव की अध्यक्षता में सम्मेलन में अ की बारहखड़ी को हटाने, ~~पंचमा~~ पंचमाक्षर की जगह अनुस्वार का प्रयोग तथा अनुनासिक की जगह भी अनुस्वार का प्रयोग किये जाने का सुझाव दिया।

डॉ. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में और भी सुझाव प्रस्तावित किये गये। इसमें हलंत का प्रयोग नहीं करने तथा विराम चिह्नों में पूर्ण विराम के लिए खड़ी रेखा (।) का प्रयोग करने का सुझाव दिया गया। अंको के लिए अन्तर्राष्ट्रीय अंको का प्रयोग किया जाए।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) ब्राह्मी लिपि और नागरी लिपि: अंतर्संबंध

देवनागरी लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है। इसकी विकास प्रक्रिया इस प्रकार है-

ब्राह्मी लिपि → उत्तरी ब्राह्मी लिपि → नागरि लिपि
ब्राह्मी लिपि → दक्षिणी ब्राह्मी लिपि → द्रविड़ लिपि

उत्तरी ~~ब्राह्मी~~ ब्राह्मी लिपि से गुप्तकाल में कुटिल लिपि का विकास हुआ। कुटिल लिपि से प्राचीन नागरी लिपि तथा शारदा लिपि का विकास हुआ। शारदा लिपि वर्तमान कश्मीर क्षेत्र में प्रयुक्त होती है।

प्राचीन ~~नागरि~~ नागरी लिपि विकास की प्रक्रिया से गुजरते हुए मध्यकालीन नागरी तथा वर्तमान में देवनागरी लिपि तक पहुँची। इस प्रक्रिया के दौरान नये प्रतीक चिह्न जोड़ गये तथा पुराने प्रतीक चिह्न परिवर्तित हुये। विभिन्न ध्वनियों के लिए देवनागरी में चिह्न सम्मिलित किये गये।

फारसी व अंग्रेजी भाषा की ध्वनियाँ भी नागरी लिपि में सम्मिलित की गई। जैसे नुक्ता (फारसी) व डॉक्टर में आधा ओ की ध्वनि।

मूलतः ~~नागरि~~ नागरी लिपि की मौलिक संरचना ब्राह्मी लिपि से ही आयी है। इसमें समय के साथ परिवर्तन जरूर आये हैं परंतु मौलिकता के तत्व

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

ब्राह्मी से ही धारण किये हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में आर्य समाज का योगदान

आर्य समाज स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्थापित किया था। दयानन्द सरस्वती ने आह्वान किया - 'वेदो की ओर चलो'। इसका उद्देश्य समाज में व्याप्त रूढ़ियाँ जैसे जाति-प्रथा व धार्मिक पाखण्ड को दूर करना था। इसके लिए राष्ट्रभाषा का निर्माण आवश्यक था।

आर्य समाज से जुड़ने की पाँचवी शर्त हिन्दी भाषा का ज्ञान थी। हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा का उत्तराधिकारी आर्य समाज ने माना। राष्ट्रभाषा राष्ट्र के स्वाभिमान, गौरव तथा सांस्कृतिक इतिहास की अभिव्यक्ति करती है। उस समय देश बिखराव से गुजर रहा था। इसलिए एक सूत्र में पिरोने के लिए राष्ट्रभाषा का कार्य अर्थ समाज ने हिन्दी को सौंपा।

आर्य समाज समाज-सुधार आंदोलनों का प्रतिनिधित्व कर रहा था। इसके लिए साहित्य का विकास आवश्यक है। केशवचन्द्र सेन ने भी हिन्दी में निबंध लिखा - 'राष्ट्रीय की एकता कैसे हो'। इस प्रकार सभी समाज-सुधारकों का उद्देश्य देश को अवनति के मार्ग से उन्नति के पथ पर आगे बढ़ाना था। आर्य-समाज ने भी हिन्दी को इसका साधन बनाया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) राजभाषा हिन्दी के विकास के संदर्भ में त्रिभाषा-सूत्र की परिकल्पना के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राजभाषा का दर्जा हिन्दी को ~~भाग - ग~~ संविधान के भाग-17, जिसका शीर्षक है राजभाषा, से मिला। भाग-17 में 343 से 351 अनुच्छेद तक विभिन्न राज्यों, संघ, उच्चतम ~~न्याल~~ न्यायालय, उच्च न्यायालय के लिए राजभाषा से संबंधित दिशा-निर्देश उल्लेखित हैं। इन अनुच्छेदों के माध्यम से यह सुनिश्चित किया गया था कि हिन्दी 15 वर्षों के बाद अकेली राजभाषा रहेगी परंतु ऐसा नहीं हुआ। अंग्रेजी ने राजभाषा का दर्जा ले रखा है।

संविधान में हर 5 वर्ष में राजभाषा आयोग बनाने का प्रावधान था। प्रथम आयोग ~~ने~~ 1955 में बना, 1956 में ~~रिपोर्ट~~ रिपोर्ट आयी तथा 1959 में राजभाषा समिति बनी। इस समिति ने विधायी आयोग व वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दावली आयोग की सिफारिश की। परंतु जब हिन्दी को राजभाषा बनाने का समय आया तब तमिलनाडु व पश्चिम बंगाल में विरोध के स्वर उठने लगे। इन परिस्थितियों में त्रिभाषा-सूत्र की परिकल्पना की गई। यह समझा गया कि इसके द्वारा राजभाषा हिन्दी का लक्ष्य पूरा किया जा सकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

त्रिभाषा सूत्र में शिक्षा के समय छात्रों को तीन भाषाओं का ज्ञान देने की व्यवस्था की गई। इसमें प्रथम भाषा मातृभाषा होगी। मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा देनी चाहिए। इसके बाद द्वितीय भाषा उत्तरी भारत में द्रविड़ भाषा अथवा उत्तर-पूर्व की भाषा होनी चाहिए। दक्षिण भारत में द्वितीय भाषा हिन्दी होनी चाहिए। तृतीय भाषा भूमण्डलीकरण के दौर में अंग्रेजी होनी चाहिए। इससे प्रमुख जरूरतें पूरी होंगी।

त्रिभाषा सूत्र से राजभाषा का लक्ष्य भी हासिल किया जा सकता था। इससे राष्ट्रीय एकता भी बढ़ती। • समस्त भाषाओं का प्रचार-प्रसार होता • तथा • विचारों का आदान-प्रदान सहज, सुलभ होता। उत्तर व दक्षिण भारत में व्यापार व परिचय और अधिक घनिष्ठ होता। परंतु राजनीतिक इच्छाशक्ति के अभाव में यह स्वप्न पूरा नहीं हो सका।

त्रिभाषा का कुछ राज्यों ने बहिष्कार किया। तमिलनाडु ने इसको लागू नहीं किया। नवोदय विद्यालयों को छोड़कर उत्तर भारत में भी संस्कृत या अन्य आसपास की भाषा से काम चलाया गया। इस प्रकार

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

त्रिभाषा सूत्र सफल नहीं हो सका।

अगर राजभाषा हिन्दी को हकीकत में बदलना है तो त्रिभाषा सूत्र ही सबसे अच्छा उपाय है। यह भारतीय गणराज्य को मजबूत करेगा। जिस भाषा के पास देवनागरी जैसी वैज्ञानिक लिपि है, बहुसंख्यक लोगों के द्वारा बोली जाती है वह अवश्य राजभाषा होनी चाहिए।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु सुझाव प्रस्तुत कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

देवनागरि लिपि के मानकीकरण की प्रक्रिया निरंतर जारी है। इसका प्रारंभ 20 वीं सदी के प्रारंभ से होता है। सावरकर बंधुओं, पं. श्यामसुंदर दास, कामता प्रसाद, महावीर प्रसाद द्विवेदी, किशोरीदास वाजपेयी सहित अनेक लोगों ने लिपि के मानकीकरण का प्रयास किया। परंतु विकास निरंतर प्रक्रिया है। अतः सुधार की गुंजाइश हमेशा रहती है।

ध्वनि के आधार पर

1) हिन्दी में अंग्रेजी व फारसी के शब्दों की ध्वनियों स्वीकार किया जाए। जैसे ज व ज़ (फारसी) इसके लिए नुक्ता का प्रयोग किया जा सकता है।

अंग्रेजी में 'डॉक्टर' में आधा 'ऑ' की ध्वनि को भी ॅ प्रतीक चिह्न से स्वीकार किया जाए।

2) गुजराती, बंगाली, मराठी जैसी भाषाओं की जो ध्वनियाँ देवनागरी में नहीं है उनके लिए प्रतीक चिह्न बनाये जाएँ।

उच्चारण के आधार पर

1) 'र' के कई रूप हैं। श, ष, स भी दुरूहता पैदा करते हैं। इनके लिए मानकीकरण व सरलीकरण किया जाए।

2) ऋ, ॠ आदि का उच्चारण कम होता जा रहा है। ये बोधगम्यता में बाधा उत्पन्न करते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वर्तनी के आधार पर

1) योजक चिह्नों का प्रयोग किया जाए। द्वन्द्व समास के शब्दों में विशेषकर योजक चिह्नों का प्रयोग किया जाना चाहिए। जैसे राम-कृष्ण

2) विराम-चिह्नों के प्रयोग में भी लचीलापन लाया जा सकता है। जैसे टंकण के लिए पूर्ण विराम में फुलस्टाप का प्रयोग।

3) हलन्त का प्रयोग नहीं किया जाए। इसमें दुविधा रहती है। जैसे - जगत् → जगत

4) विसर्ग का प्रयोग भी नहीं किया जाए। जैसे- दुःख → दुख।

इस तरह देवनागरी का मानकीकरण एक नये स्तर पर ले जाया जा सकता है। नवीन तकनीकी व वैज्ञानिक विकासों को ध्यान में रखकर मानकीकरण किया जाना चाहिए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) "हिन्दी भाषा एवं लिपि के विकास में 'नागरी प्रचारिणी सभा' का ऐतिहासिक महत्त्व है।" इस कथन पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

20वीं सदी के प्रारंभ में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी के मानकीकरण के प्रयास प्रारंभ किये। हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने के लिए 'सरस्वती' पत्रिका ने ~~अधु~~ ~~प्रख~~ कोशिश की। इसमें ब्रजभाषा में लिखना बंद कर दिया। 'नागरी प्रचारिणी सभा' के तत्वाधान में ही व्याकरण लिखने के भी प्रयास हुये।

द्विवेदी जी ने निबंध लिखकर हिन्दी के व्याकरण न होने पर चिंता व्यक्त की। बाद में कामता प्रसाद गुरु ने 'हिन्दी की हीनता' निबंध में मानकीकरण की आवश्यकता व व्याकरण विकास पर बल दिया। नागरी प्रचारिणी सभा ने कई पुरस्कारों की घोषणा भी की।

बाद में कामता॰ प्रसाद गुरु ने व्याकरण लिखने का कार्य आरंभ किया। इसमें तीन संस्करण प्रकाशित हुये जिसमें ~~अंतिम~~ ~~सख~~ ~~सख~~ संक्षिप्त हिन्दी व्याकरण, प्रथम व मध्य हिन्दी व्याकरण थे। यह वृहद् व सम्पूर्ण ग्रंथ था। इसके इन्होंने हिन्दी वाक्य पृथक्करण पुस्तक भी लिखी।

नागरी ~~प्रचारीिणी~~ प्रचारिणी सभा के प्रयासों से यह विश्वविद्यालयों में पढ़ायी जाने लगी। बी.ए. व एम.ए. के पाठ्यक्रम प्रारंभ किये गये। अनुसंधान प्रारंभ हुआ।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार नागरी प्रचारिणी सभा का योगदान स्वतंत्रता से पहले उल्लेखनीय रहा। स्वतंत्रता के बाद भी मानकीकरण का प्रयास जारी रहा। केशवप्रसाद वाजपेयी को हिन्दी का नवीन व्याकरण लिखने की जिम्मेदारी सौंपी गयी। इन्होंने राहुल सांकृत्यायन, हजारी प्रसाद द्विवेदी व काका ~~कालेलकर~~ कालेलकर के सहयोग से व्याकरण लिखा यह भी ~~सभा~~ नागरी प्रचारिणी सभा के प्रकाशन से 'हिन्दी शब्दानुशासन' के नाम से प्रकाशित हुआ।

अतः नागरी प्रचारिणी सभा का योगदान हिन्दी भाषा व लिपि दोनों के लिए उल्लेखनीय व अविस्मरणीय है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) प्रताप नारायण मिश्र

प्रताप नारायण मिश्र भारतेंदु मण्डली के सदस्य थे। इन्होंने पद्य व गद्य दोनों में रचना की है। परंतु मुख्यतः पद्य की वजह से प्रसिद्ध हुये। इनकी कविताएँ 'प्रताप लहरी' में संग्रहित हैं। इनकी कविताएँ ग्रामीण मौज-मस्ती, हास्य-विनोद से युक्त हैं।

प्रताप नारायण मिश्र ने हिन्दी भाषा व देवनागरी को प्रचारित किया। इन्होंने कहा -
"जपो निरंतर एक जबान
~~हिन्दी~~ हिंदु हिंदुस्तान"

अंग्रेजी शासन का विरोध किया तथा कहा -
"रोओ सब मुँह बाय - बाय
हाय रिकस हाय - हाय"

यह कर व धन निष्क्रमण की समस्या भारत को खोखला कर रही थी। इन्होंने निबंध भी लिखे। इनके निबंधों में विषयगत व शैलीगत वैविध्य है। इन्होंने सामाजिक, राजनीतिक व समस्या प्रधान निबंध लिखे। कानपुर में इन्होंने 'ब्राह्मण' पत्रिका का संपादन भी किया। इस प्रकार प्रताप मिश्र ने देश में नवजागरण के लिए प्रेरित किया। उनकी पंक्तियाँ:-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

अंग्रेज सर्वस्व लिए जात

हम केवल लेक्चर के तेज" ।

कुछ निबंधों एवं नाटकों का भी नामोल्लेख करें।

5/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कविवचन सुधा

कविवचन सुधा पत्रिका भारतेंदु हरिश्चंद्र ने संपादित की। भारतेंदु मंडली का नवजागरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन पत्रिकाओं के माध्यम से ही हिंदी गद्य की भाषा के रूप में प्रचलित हुई। अन्य पत्रिकाएँ 'हरिश्चंद्र मैगजीन' व बालबोधिनी पत्रिका की बालबोधिनी पत्रिका में महिला समस्याओं पर परिचर्चा की जाती थी।

कविवचन सुधा भारतेंदु की देशसेवा का प्रमाण था। हिंदी का प्रचार-प्रसार इसी पत्रिका से हुआ। भारतेंदु नाटककार व रंगकर्मी भी थे। इस पत्रिका से प्रोत्साहन पाकर अन्य सदस्यों ने भी पत्रिका प्रकाशन शुरू किए। इनमें बालकृष्ण भट्ट की 'हिंदी प्रदीप', प्रताप नारायण मिश्र की 'ब्राह्मण' तथा प्रमुख थे।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) हिन्दी की मनोवैज्ञानिक उपन्यासधारा

हिन्दी में प्रेमचंद के बाद प्रगतिवादी धारा आयी। इसके मनोवैज्ञानिक धारा का प्रवर्तन हुआ। इसमें मुख्य लेखक जैनेन्द्र व अज्ञेय थे। जैनेन्द्र के प्रमुख उपन्यास कल्याणी, त्यागपत्र थे। अज्ञेय ने शेखर - एक जीवनी, नदी के द्वीप उपन्यास लिखे।

इलाचंद्र जोशी का नाम उल्लेख करें

मनोवैज्ञानिक धारा फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद से प्रभावित थी यहाँ अन्तर्जगत पर बल था, बहिर्जगत पर नहीं। मनन, चिंतन व अवचेतन मुख्य थे। पात्रों की संख्या कम होती है। घटनाएँ भी सीमित होती हैं। वातावरण पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता। यह धारा 60 के दशक के आस-पास प्रचलित हुई। इसमें अन्तर्मन का विश्लेषण प्रमुख था।

प्रेमचंद के उपन्यास समाज पर आधारित, इनके शेष भाग की पूर्ति जैनेन्द्र के उपन्यासों ने की। अज्ञेय ने आधुनिक समस्याओं के मूल में मनुष्य को माना। इन्होंने अस्तित्ववाद व मनोविश्लेषणवाद को संयोजित कर दिया।

नारी समस्या जैनेन्द्र के उपन्यासों का केन्द्रबिन्दु बिंदु रही है। मनोवैज्ञानिक धारा एक अलग धारा थी जिसका शिल्प भी विशिष्ट था

ठीक है

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) केशव: कठिन काव्य के प्रेत

केशवदास को रीतिकाल का प्रथम कवि माना जाता है। केशवदास को ~~क~~ आचार्य माना जाता है। उन्होंने ~~र~~ लक्षण ग्रंथों की रचना की। इसमें रसिकप्रिया तथा कविप्रिया मुख्य हैं। इनकी भाषा की ~~प्राजंलता व कलि~~ क्लिष्टता व अलंकारों के आधिक्य के कारण इन्हें कठिन काव्य का प्रेत कहा जाता है।

केशवदास में ~~कठ~~ क्लिष्टता के कारण:-

1) अलंकारों का आधिक्य
2) सूक्ष्मता व अलंकारों से चमत्कार प्रकट करने की कोशिश।
3) संस्कृतनिष्ठता व हृदयहीनता

केशवदास के रामचंद्रिका की संवाद योजना भी प्रसिद्ध है। ~~अ~~ व्यंजनाधर्मी एवं राजनीतिक दावपेंचों की वाकपटुता बहुत प्रभावशाली है।

केशवदास के लक्षण ग्रंथ धनोपार्जन के उद्देश्य से थे। इनमें मौलिकता नहीं है। इसमें रसों व अलंकारों का सर्वांग वर्णन है। इसलिए साधारण ब्रजभाषा में समझा जा सकता है।

केशवदास के काव्य को हृदयहीन काव्य भी कहा जाता है। अतः रामचंद्रिका रामचरितमानस की तरह प्रसिद्ध नहीं हुआ। इनमें मार्मिक स्थलों की पहचान नहीं। कुल मिलाकर इनका काव्य ~~क~~ क्लिष्ट है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) पद्माकर का शृंगार-वर्णन

पद्माकर रीतिकाल के रीतिबद्ध रचनाकार हैं। इन्होंने 'जगत्विनोद' व 'पद्माभरण' काव्यों की रचना की है। जगत्विनोद की प्रकृति लक्षण ग्रंथ की है। पद्माभरण शृंगार प्रधान रचना है।

अनुप्रास अलंकार का इनकी रचनाओं में आधिक्य है। उदाहरण –

"गुलगुली गिलमें, गलीचा है, गलीनन है
चाँदनी है, चिक है, चरागन की माला है।"

इन्होंने लक्षण ग्रंथ भी लिखे हैं। परंतु यहाँ न तो संस्कृत का पाण्डित्य है न ही यहाँ मौलिक सिद्धांतों का प्रतिपादन हुआ है। अतः इन्हें आचार्य नहीं माना जा सकता।

इन्होंने यहाँ शृंगार का वर्णन अच्छी तरह किया है –

"साँवरो भीजियों गोरिन के संग
गोरिन संग भीजियों साँवरो"

इस प्रकार पद्माकर रीतिबद्ध कवि है। दरबारी कवि रहते हुये शृंगार वर्णन किया। रीतिकाल में शृंगार की प्रधानता है और यह पद्माकर के यहाँ भी देखने को मिलती है।

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) "तुलसी की भक्ति को यदि उसकी सर्वांगता में लक्षित करना हो तो 'विनयपत्रिका' का अवगाहन करना चाहिये।" -अपना मत प्रकट करते हुए विनयपत्रिका में अभिव्यक्त तुलसीदास की भक्ति-भावना का निरूपण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तुलसीदास जी भक्तिकाल के प्रमुख रचनाकार हैं इन्होंने रामचरितमानस के माध्यम से सम्पूर्ण भारत में राम को पहुँचाया। इनके राम मर्यादित हैं, लोकरक्षक हैं।

विनयपत्रिका में तुलसीदास जी की भक्ति के सारे पक्ष उजागर होते हैं। तुलसीदास जी समन्वय के कवि हैं। उन्होंने सगुण, निर्गुण, राम-शिव भक्ति तथा परिवार में भी समन्वय का पथ प्रदर्शित किया।

"सिया राम मय सब जग जानी"

तुलसीदासजी ने कवितावली में राम भक्ति, गंगा भक्ति व शिव तथा कृष्ण की भक्ति भी की है। तुलसीदास जी का अवधी व ब्रज दोनों पर समान अधिकार था। उनकी सगुण भक्ति एकनिष्ठ थी। उन्होंने केवट व हनुमान को कहा -

"तुम मम प्रिय भरत सम भाई"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) गोदानेतर उपन्यासों में प्रेमचंद द्वारा सृजित कौन-सा चरित्र आपको सर्वाधिक आकर्षित करता है और क्यों? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कलम के सिपाही प्रेमचंद उपन्यास में युग प्रवर्तक है। प्रेमचंद ने उपन्यास को अलग ऊँचाई पर पहुँचाया। इसमें आदर्शवाद व यथार्थवाद दोनों था। चरित्र आमजन से लिये गये वर्ग विशेष के प्रतीक थे। गोदान में होरी, धनिया, मालती जैसे चरित्र आकर्षित करते हैं। गोदान के अलावा प्रेमचंद ने निर्मला, गबन, सेवासदन, रंगभूमि व कर्मभूमि मुख्य उपन्यास लिखे।

सेवासदन आदर्शोन्मुख यथार्थवाद है इसमें स्त्री की वेश्यावृत्ति के कारणों की समीक्षा करते हुए समाधान भी सुझाया गया है। रंगभूमि में अंधा सूरदास परिवर्तन की लहर लाता है। 'निर्मला' बेमेल विवाह से उत्पन्न स्थिति का वर्णन है। 'निर्मला' का चरित्र एक अमीर पिता की पुत्री से अभागी पत्नी में परिवर्तित होती है। यह चरित्र आकर्षक भी है तथा सुगठ भी। प्रेमचंद ने 'निर्मला' का वर्णन विस्तार से किया है। उपन्यास नायिका प्रधान है। इसे शीर्षक के आधार पर चरित्र प्रधान भी कहा जा सकता है परंतु इसमें मुख्य उद्देश्य बेमेल विवाह से उत्पन्न समस्याएँ हैं। अतः यह उद्देश्य प्रधान भी कहा जा सकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

निर्मला का बचपन अच्छी तरह भोग-विलास में बीता। उसके बाद वह अपने पिता की उम्र के पुरुष के साथ शादी करने पर मजबूर होती है। यह परिस्थिति परिवर्तन आगे चलकर जैनेन्द्र व मोहन राकेश में भी दिखता है। यहाँ निर्मला अपनी आँखों से पूरा परिवार क्षत-विक्षत होते देखती है। उसका व पति के पुत्र का प्रेम बढ़ता है जिससे शक व संदेह परिवार के विघटन का कारण बनते हैं, यह एक ट्रेजेडी है। इसमें सम्पूर्ण उपन्यास में तनाव बना रहता है। निर्मला का चरित्र इसी तनाव से बनता है। निर्मला का चरित्र नारी की समस्याओं को प्रकट करता है तथा बेमेल विवाह की समस्या को भी दिखाता है। अतः यह चरित्र आदर्श है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) भारतेन्दुयुगीन साहित्य में निहित जिंदादिली का उद्घाटन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारतेन्दु मण्डली का हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र तथा बद्रीनारायण प्रेमधन महत्वपूर्ण है। इन्होंने पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया। इनकी भाषा हास्य-प्रहसन व व्यंग्य से युक्त थी।

बालकृष्ण भट्ट ने हास्य व व्यंग्य के माध्यम से अंग्रेजी शासन की बुराई की। उन्हें कुटिलता की खान कहा। उन्होंने कहा - राजसत्ता और प्रजा की भलाई दोनों एक साथ कैसे हो सकता जैसे हँसना व गाल फुलाना एक साथ संभव नहीं है। अतः लोकभाषा का प्रयोग करके, लोकोक्तियों व मुहावरों के माध्यम से जिदादिली वाला साहित्य लिखा। निबंधकार व उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध हुये।

भारतेन्दु स्वयं हास्य व व्यंग्य का सहारा लेकर अंग्रेजी राज के खिलाफ जागरूकता फैला रहे थे उन्होंने कहा - "हाथ पैर हिलाना नहीं अच्छा
मर जाये वे उठकर जाना नहीं अच्छा"

प्रताप नारायण मिश्र ग्रामीण परिवेश थे उन्होंने कविताएँ व गद्य रचनाएँ लिखी। उनकी भाषा में सहजता व ग्रामीण सौम्यता थी। उनकी भाषा लोक-शब्दों से युक्त थी। उन्होंने हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए जोर दिया तथा देवनागरी लिपि को अपनाने को प्रयास किया —

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"देवनागरी गले लगाओ
इसमें नेह महान"

कुछ सदस्यों ने अंग्रेजी राज की तारीफ भी की है - "अमी कटोरिया रानी
चिरंजवी रहो सदा विक्टोरिया रानी"

इस प्रकार साहित्य जिंदादिली से युक्त था। इसमें वैविध्य था तथा भाव-विनोद भी। बालकृष्ण भट्ट ने संस्कृतनिष्ठ भाषा में भी हास्य व प्रहसन का प्रयोग करके साहित्य को रोचक बनाया। भारतेंदु मंडली का साहित्य इस तरह जिंदादिली से भरपूर था।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) हिन्दी की सतसई परंपरा का संक्षिप्त परिचय देते हुए उसमें बिहारी सतसई का स्थान निर्धारित कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी में सतसई की वृहद् परंपरा रही है। रीतिकाल में बिहारी व वृंद ने इसे नई दिशा दी। सतसई मुख्यतः मुक्तक छंदों का समूह होती है। इसमें विषय की विविधता भी होती है तथा भाषा की भी। बिहारी व वृंद की सतसई ब्रजभाषा में है। इसमें सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक चिंतन, तथा गणित, विज्ञान, दर्शन जैसे विषयों का वर्णन भी रहता है। रीतिकाल में ये रचनाएँ राजदरबार में लिखी गई। इनका मुख्य उद्देश्य धनोपार्जन था।

बिहारी की सतसई अत्यंत प्रसिद्ध है। साहित्यिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। जॉर्ज ग्रियर्सन ने बिहारी की तारीफ में कहा कि इनके समकक्ष अर्थगर्भिता व कल्पना की समाहार क्षमता वाला कोई रचनाकार नहीं हुआ। इनके लिए कहा जाता है—

"सतसैया के दोहे अरु नाविक के तीर
देखन में छोटन लगो घाव करे गंभीर"

बिहारी 'गागर में सागर' भरने वाले कवि हैं। बिहारी ने एक ही पद में नौ क्रियाएँ प्रयुक्त की—

'कहत नटत रीझत खीझत मिलत खिलत लजियात,
भरे भुवन में नैनन ही सों करे बात'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसमें नीतिपरक चिंतन भी है तथा गणित जैसे विषय भी हैं - 'कहते सबै बेन्दी दिए
अंक दस गुणो होत जात"

नीतिपरक चिंतन वृंद के यहाँ भी दिखता है। वे कहते हैं - तैते पाँव पसारिए जिते लंबी सौर", इस प्रकार विषय की विविधता सतसई की विशेषता है।

बिहारी एक दरबारी कवि थे। अतः श्रृंगार उनकी मजबूरी थी। श्रृंगार में भी बिहारी कम नहीं थे। उन्होंने नख शिख वर्णन, नायिका भेद, भोग-विलासिता का वर्णन किया है। नायिका के सौंदर्य की तारीफ करते हुए बिहारी कहते हैं -

"अंग अंग नग जगमगत
दीप शिखा सी देह,
दीयरा बुझाए ही रहे
बड़ो उजेरो गेह"

इस प्रकार बिहारी की सतसई सभी मानकों पर खरा उतरती है। इसमें श्रृंगार, भक्ति, हास्य, नीति, कर्त्तव्यबोध, राजनीति, सामाजिक-धार्मिक पाखण्ड सभी एक साथ उपस्थित हैं। इसलिए बिहारी की सतसई हिन्दी की सतसई परंपरा में उच्च स्थान रखती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) "उपन्यासकार जैनेन्द्र ने हिन्दी उपन्यास को नया शिल्प दिया।" इस कथन पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैनेन्द्र के उपन्यास प्रेमचंद के उपन्यासों के पूरक है। प्रेमचंद ने सामाजिक यथार्थवाद दिखाया। व्यक्तिगत स्तर के चिंतन की कमी को आगे चलकर जैनेन्द्र ने पूरा किया। इन्होंने ~~मनो~~ मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास लिखे। मनोविश्लेषणवाद फ्रायड द्वारा प्रतिपादित किया गया था। इसमें व्यक्तिगत चिंतन, अवचेतन को प्राथमिकता दी गई। फ्रायड के सिद्धांतों के साथ जैनेन्द्र ने गाँधीवाद को भी मिला दिया।

इनके प्रमुख उपन्यास 'सुनीता', कल्याणी, त्यागपत्र व परख थे। नारी समस्या इनके केन्द्र में रही है। नारी स्वतंत्रता के प्रश्न जैनेन्द्र ने बुलंद स्वर में उठाये। 'सुनीता' में नारी को घर से बाहर निकलना चाहिए की नहीं, 'त्यागपत्र' में 'स्त्रीत्व' व ~~स्व~~ 'सतीत्व' में क्या बेहतर है। ~~इस प्रकार~~

शिल्प के आधार पर यहाँ कथानक में पात्रों की संख्या कम होती है। कथानक में घटनाएँ भी कम होती हैं। इसलिए भावनाओं की गहराई

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

होती है। यहाँ पर पात्रों का विस्तार चिंतन, मनन के आधार पर है।

इनका शिल्प - 'सुनीता' में एक दर्शक के रूप में वर्णन है। 'त्यागपत्र' में केवल एक पात्र सम्पूर्ण कथा कह देता है। 'जयवर्धन' में फैंटेसी शिल्प का प्रयोग है। यह उपन्यास डायरी शैली में है। यहाँ कल्पनाशीलता का प्रयोग भी किया गया है।

इस प्रकार जैनेन्द्र का शिल्प नवीन व प्रयोगधर्मी है। इन्होंने आधुनिक समस्याओं को भावना के धरातल पर रखा तथा प्रगतिवाद से दूरी बनाकर मूल्यांकन किया।

ठीक है

8½

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) भक्तिकालीन कृष्णभक्तिधारा के कवि नंददास की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कवि नंददास अष्टछाप के प्रमुख कवि हैं। यद्यपि सूरदास को अष्टछाप का जहाज कहा जाता है परंतु नंददास भी अपनी विशिष्ट भाषा शैली के लिए प्रसिद्ध हैं। नंददास के गुरु विट्ठलनाथ थे। शुद्ध अद्वैत दर्शन के अनुयायी थे।

सूरदास की भाषा सरल थी परंतु नंददास की भाषा क्लिष्ट थी। क्लिष्टता के कारण इनके लिए कहा जाता है-

"और कवि गढ़िया
नंददास जड़िया"

नंददास के अलावा चतुर्भुज दास, कीर्तनगायी व गोविंदस्वामी भी विट्ठलनाथ के शिष्य थे। शुद्ध अद्वैत दर्शन में पुष्टिमार्ग पर बल दिया गया। काव्य की रचना ब्रजभाषा में हुई है।

नंददास ने भ्रमरगीत सार भी लिखा है। इनका भ्रमरगीत सार शिल्प व संवेदना के स्तर पर सूरदास से अलग है। यहाँ राधा ग्रामीण परिवेश की नहीं है। राधा यहाँ नगर में रहती है। राधा ज्ञान योग की जानकार है तथा उद्धव को ज्ञान से पराजित करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation